सम्राट अशोक महान का बौद्ध धर्म के विकास में योगदान

Dr. Narendra Kumar Sharma*

Lecturer, Department of History, Babu Shobha Ram Government Arts College, Alwar, Rajasthan

शोध सार संक्षेप:- ***प्राचीन भारत के इतिहास में केवल एक शासक को चक्रवर्ती राजा होने का सम्मान मिला है। इस शासक को ऐतिहासिक पुस्तकों में सम्राट महान अशोक और चक्रवर्ती सम्राट अशोक के नाम से जाना जाता है। अशोक एक असाधारण शासक और चक्रवर्ती सम्राट कैसे बने, चंद्रगुप्त मौर्य के पोते के रूप में, महान शासक बिन्दुसार के पुत्र, जिन्होंने भरत वंश के स्वर्ण पक्षी को सम्मानित किया था, के संबंध में विभिन्न तथ्य उपलब्ध हैं। बचपन से मृत्यु तक, अशोक एक शक्तिशाली और बहादुर राजा के साथ-साथ विशुद्ध धार्मिक व्यक्ति का जीवन जीते थे। जबकि सम्राट के रूप में अशोक ने एक भी युद्ध को नहीं हराया था, जबकि बौद्ध धर्म के अनुयायी के रूप में, उन्होंने इस धर्म के प्रचारक के धर्म का भी पूरा अभ्यास किया था। जब उसने राज्य का आनंद लेने के लिए अपने 101 भाइयों में से कई को मार डाला था, दूसरी ओर, कलिंग के विनाश को देखते हुए, उसने जीवन के लिए अहिंसक होने का भी संकल्प लिया। इसे अशोक का वीर माना जा सकता है कि मौर्य वंश में केवल अशोक ने चालीस वर्षों तक सबसे लंबे समय तक शासन किया। चंद्रगुप्त के बाद अशोक के शासनकाल को सुनहरा शासनकाल माना जाता है।***

मुख्य शब्द:- ***प्रारंभिक जीवन अशोक का असाधारण बचपन अशोक का राज्याभिषेक मौर्य साम्राज्य का अभूतपूर्व विस्ता बौद्ध धर्म के विकास में योगदान***

----------♦----------

प्रारंभिक जीवन:

चक्रवर्ती सम्राट अशोक (ईसा पूर्व 302 से 232 ईसा पूर्व) विश्व प्रसिद्ध और शक्तिशाली भारतीय मौर्य वंश के महान सम्राट थे। सम्राट अशोक का पूरा नाम देवानामप्रिया अशोक मौर्य (राजा प्रियदर्शी, देवताओं का प्रिय) था। उनका शासनकाल प्राचीन भारत में 249 ईसा पूर्व से 232 ईसा पूर्व तक था। मौर्य वंश के चक्रवर्ती सम्राट अशोक ने अखंड भारत पर शासन किया और उनका मौर्य साम्राज्य उत्तर में हिंदुकुश की श्रेणियों से लेकर दक्षिण में गोदावरी नदी के दक्षिण और मैसूर तक और पूर्व में बांग्लादेश से लेकर अफ़गानिस्तान, ईरान तक फैला था। । सम्राट अशोक का साम्राज्य वर्तमान भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश, भूटान, म्यांमार के अधिकांश क्षेत्रों में व्याप्त है, यह विशाल साम्राज्य अब तक का सबसे बड़ा भारतीय साम्राज्य रहा है। चक्रवर्ती सम्राट अशोक हमेशा दुनिया के सभी महान और शक्तिशाली सम्राटों और राजाओं की पंक्ति में सबसे ऊपर रहे हैं। सम्राट अशोक भारत के सबसे शक्तिशाली और महान सम्राट हैं। सम्राट अशोक 'चक्रवर्ती सम्राट अशोक' में कहाँ जाता है, जिसका अर्थ है – 'सम्राटों का सम्राट', और यह स्थान केवल भारत में सम्राट अशोक द्वारा पाया जाता है। सम्राट अशोक अपने कुशल प्रशासन और अपने विशाल साम्राज्य से बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए भी जाने जाते हैं। सम्राट अशोक ने आज पूरे एशिया और अन्य सभी महादिपों में बौद्ध धर्म का प्रचार किया। सम्राट अशोक के संदर्भ के स्तंभ और शिलालेख आज भी भारत में कई स्थानों पर दिखाई देते हैं। इसलिए, सम्राट अशोक की ऐतिहासिक जानकारी किसी भी सम्राट या राजा से व्यापक रूप से उपलब्ध है। सम्राट अशोक प्रेम, साहिष्णुता, सत्य, अहिंसा और शाकाहारी जीवन प्रणालियों के सच्चे समर्थक थे, इसलिए उनका नाम इतिहास में महान परोपकारी सम्राट के रूप में दर्ज किया गया है। अपने जीवन के उत्तरार्ध में, सम्राट अशोक बौद्ध बन गए, जो भगवान बुद्ध की मानवतावादी शिक्षाओं से प्रभावित थे, और उनकी स्मृति में, उन्होंने कई स्तंभों का निर्माण किया, जो आज भी उनके जन्मस्थान में मायादेवी मंदिर के पास हैं - नेपाल में लुम्बिनी, सारनाथ, बोध गया, कुशीनगर और श्रीलंका, थाईलैंड, चीन अभी भी इन देशों में अशोक स्तंभ के रूप में देखे जा सकते हैं। सम्राट अशोक ने श्रीलंका, अफगानिस्तान, पश्चिम एशिया, मिस्र और ग्रीस में भारत के अलावा बौद्ध धर्म का प्रचार किया। सम्राट अशोक ने अपने पूरे जीवन में एक भी युद्ध नहीं हारा। सम्राट अशोक के समय में 23 विश्वविद्यालय स्थापित किए गए थे जिनमें तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, कंधार आदि विश्वविद्यालय प्रमुख थे। इन

विश्वविद्यालयों में अध्ययन करने के लिए विदेशों से कई छात्र भारत आते थे। ये विश्वविद्यालय उस समय के उत्कृष्ट विश्वविद्यालय थे। शिलालेख शुरू करने वाला अशोक पहला शासक था।

उद्देश्य

1. सम्राट अशोक महान के बौद्ध धर्म में योगदान का अध्ययन करना।

2. सम्राट अशोक के विचारों के बारे में जानकारी प्रदान करना।

परिकल्पना

1. अशोक महान का बौद्ध धर्म के विकास हेतु कार्य किए।

2. सम्राट अशोक महान ने बौद्ध धर्म के प्रचार हेतु सामाजिक एवम धार्मिक कार्य किए।

शोध विधितन्त्र

इस शोध के अध्ययन में ऐतिहासिक अध्ययन पद्धति को अपनाया गया है। यह शोध ऐतिहासिक दृष्टिकोण पर आधारित है। इस लेख में प्राथमिक और माध्यमिक दोनों डेटा साक्षात्कार, व्यक्तिगत पेपर, समाचार पत्र, रिकॉर्ड और विभिन्न इतिहास के स्रोतों से प्राप्त किए गए हैं।

अशोक का असाधारण बचपन:

चंद्रगुप्त मौर्य के पुत्र बिन्दुसार के पुत्र अशोक का जन्म 304 ईसा पूर्व पाटलिपुत्र या पटना में हुआ था। उनके बचपन का नाम देवनमप्रिया अशोक मौर्य था। बचपन से ही, अशोक एक वीर राजा के रूप में अपना समय बिताते थे। क्षत्रिय होने के नाते, कठिन शिकार खेलना उनका पसंदीदा काम था। पिता के राज्य में अपना हाथ बंटाना भी अशोक के दैनिक जीवन का एक हिस्सा था। उसी समय, लोगों के हितों में काम करने और फैसले लेने के कारण, अशोक ने विषयों को अपने राजा के रूप में स्वीकार करना शुरू कर दिया। इन गुणों ने बिंदुसार को अपने तीसरे पुत्र, अशोक को कम उम्र में सम्राट बनाया।

अशोक का राज्याभिषेक:

चंद्रगुप्त मौर्य के पोते के रूप में, अशोक को उन सभी गुणों को विरासत में मिला, जिसने चंद्रगुप्त को एक महान शासक का दर्जा दिया। अशोक के सिंहासन पर बैठने के इतिहास में विभिन्न प्रमाण हैं। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि पहले बिन्दुसार ने अपने बड़े बेटे सुशीम को गद्दी सौंप दी थी। अशोक उस समय एक बहादुर युवा के रूप में लोकप्रिय हुए। इस कारण से, सुशीम अपने पिता को विभिन्न स्थानों पर हो रहे विद्रोहों को दबाने के लिए भेजा करता था। तक्षशिला, निर्वासन, उज्जैन और कलिंग के विद्रोहियों का उल्लेख सबसे पहले इन घटनाओं में मिलता है। अशोक ने खुशी से इन स्थानों का दौरा किया और न केवल इन विद्रोहों को पूरी तरह से नष्ट कर दिया, बल्कि मत्स्यकुमारी कौरविक को निर्वासन में भी शामिल किया और उज्जैन में देवी नामक एक सुंदर महिला से शादी की। इन सभी घटनाओं के कारण, अशोक के समर्थन में और सुशीम के खिलाफ सैन्य शक्ति और प्रजा शक्ति आ गई। उनका रास्ता रोकने के लिए, अशोक के सौतेले भाइयों ने उनकी हत्या करने का प्रयास किया, जिसे अशोक ने समझदारी से विफल कर दिया और खुद सिंहासन प्राप्त किया।

मौर्य साम्राज्य का अभूतपूर्व विस्तार:

ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार, अशोक ने अपने जीवनकाल में न केवल पूरे भारत में 269 से 232 ईसा पूर्व तक शासन किया। उनके झंडे के नीचे, क्षेत्र की राज्य सीमाएं उत्तर में हिंदुकुश की पर्वत श्रृंखला से लेकर दक्षिण में मैसूर तक और पूर्व में बांग्लादेश से लेकर पश्चिम में अफगानिस्तान तक फैली हुई थीं। इसके अलावा, वर्तमान भौगोलिक सीमाओं के अनुसार, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश, भूटान और म्यांमार के अधिकांश क्षेत्र को भी सम्राट अशोक का शासन माना जाता है। इतिहासकार इस नियम को इतिहास का सबसे बड़ा नियम मानते रहे हैं।

बौद्ध धर्म के विकास में योगदान:

सम्राट अशोक का नाम बौद्ध धर्म का पर्याय बन गया है। अशोक पहली बार बौद्ध धर्म के संपर्क में आया जब उसके पिता बिंबसार ने उसे उज्जैन में विद्रोह को दबाने के लिए भेजा। उस समय, सम्राट अशोक अपने बड़े भाई सुशीम से मौत के डर से विद्रोह को कुचलने के बाद छलावरण में बौद्ध तपस्वियों के साथ बने रहे। उस समय, वह पहले बौद्ध धर्म और उसके कानूनों आदि से परिचित हुआ।

इसके बाद, सम्राट बनने के बाद अपने साम्राज्य विस्तार की प्रक्रिया में, अशोक, जिसने अपने जीवनकाल में कोई युद्ध नहीं खोया था, कलिंग युद्ध जीतकर भी मानसिक रूप से हार गया था। इस युद्ध की भयावहता और विनाशकारी विनाश से अशोक का मन विचलित था। इस आतंक को दूर करने के लिए अशोक ने बौद्ध धर्म अपना लिया। इसके बाद, अशोक ने अपना पूरा जीवन सामाजिक और धार्मिक कार्यों के लिए व्यतीत करते हुए व्यतीत किया। न केवल भारत में बल्कि भारत के बाहर भी, श्रीलंका, अफगानिस्तान, सीरिया, मिस्र, नेपाल और ग्रीस आदि देशों में, अशोक ने अपने बेटे और बेटी के साथ धार्मिक उपदेशक भेजे।

सम्राट अशोक के इस तीर्थयात्रा में, कई राजाओं ने भी इसका अनुसरण करते हुए बौद्ध धर्म अपना लिया था। श्रीलंका के राजा, तिस्सा, एक ऐसे ही राजा थे जिन्होंने अशोक के पुत्र महेंद्र के माध्यम से बौद्ध धर्म ग्रहण किया था। इसके अलावा, अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार में निम्नलिखित प्रकार के कार्य किए।

धर्म नक्काशीदार,

धर्म महापात्रों की नियुक्ति,

दिव्य रूपों का प्रदर्शन,

लोकाचार के कार्य,

धर्म श्रवण और उपदेश की प्रणाली,

तीर्थयात्रा की शुरुआत

राज्य के अधिकारियों की नियुक्ति,

विदेश में प्रचारक भेजना, आदि।

इनमें से, अशोक ने धार्मिक यात्राओं के माध्यम से अपना काम शुरू किया। वह इन धर्म यत्रों के माध्यम से नेपाल गए जहाँ उन्होंने कनकमुनि स्तूप की स्थापना की। इसके अलावा, धर्म महापात्रों के माध्यम से, उन्होंने समाज के विभिन्न धर्मों के बीच सद्भाव और समन्वय स्थापित करने का भी प्रयास किया, जिसमें वह पूरी तरह से सफल साबित हुए। बौद्ध धर्म अपनाने के बाद, अशोक ने राज्य में भोग-संबंधी यात्राओं पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगा दिया। हालाँकि अशोक बौद्ध धर्म को अपनाने से पहले वैदिक नियमों और नीतियों का पालनकर्ता था, लेकिन ऐसी जानकारी कल्हण ऋषि की पुस्तक 'राजतरंगी' से मिलती है। लेकिन एक बार अशोक बौद्ध धर्म की शरण में आ गया, इसे मोक्ष का अंतिम मार्ग माना गया।

सम्राट अशोक ने कहा कि निम्नलिखित महत्वपूर्ण तथ्य निम्नलिखित हैं -

1. सबसे बड़ी जीत प्यार की होती है, यह हमेशा के लिए दिल जीत लेता है।
2. एक सफल राजा वही होता है जो जानता है कि जनता को क्या चाहिए।
3. एक राजा की पहचान उसकी प्रजा से होती है।
4. तीन क्रियाएं जो हमें हमेशा स्वर्ग की ओर ले जाती हैं - माता-पिता का सम्मान, सभी प्राणियों पर दया और सच्चा वचन।

निष्कर्ष:

इस लेख से स्पष्ट है कि सम्राट अशोक ने अपने शासनकाल में बौद्ध धर्म के साथ-साथ अपने सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक दृष्टिकोण से राष्ट्र को विकास का मार्ग दिखाया। अशोक के शिलालेख में कहा गया है कि सम्राट अशोक ने भारत के विकास में अग्रणी भूमिका निभाई। सम्राट अशोक द्वारा किए गए कार्यों से प्रेरणा लेकर राष्ट्र को समृद्ध बनाया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची:

1. रोमिला थापरः भारत का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996

2. विमल चंद्र पांडेः प्राचीन भारत का इतिहास (भाग -2), अभय प्रेस, मेरठ, 1987-88

3. विमल चंद्र पांडेः प्राचीन भारत का राजनीतिक और सांस्कृतिक इतिहास (भाग 2), सेंट्रल पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद, 2001.

4. के. ए. नीलकंठ शास्त्री (2007). नंद-मौर्य युग भारत, मोतीलाल बनारसीदास, पिल्ला, 233- आईएसबीएन 978-81-208-2104-0।

5. सिंह, उपिंदर (2008), प्राचीन और प्रारंभिक मध्ययुगीन भारत का इतिहासः पाषाण युग से 12 वीं शताब्दी तक, नई दिल्लीः पियर्सन एजुकेशन, आईएसबीएन 978-81-317-1120-0

6. भारत का संक्षिप्त इतिहास, भारत पर तत्काल प्रभाव, 1992 में कृष्ण चंद्र सागरवासुदेव उपाध्यायः प्राचीन भारतीय स्तूप, गुहास और मंदिर, पटना, 1972

7. भगवतीशरण उपाध्यायः भारतीय कला और संस्कृति की भूमिका, नई दिल्ली, 1991

8. भगवतीशरण उपाध्यायः अशोक महान का सांस्कृतिक इतिहास, लखनऊ, 1969

Corresponding Author

Dr. Narendra Kumar Sharma*

Lecturer, Department of History, Babu Shobha Ram Government Arts College, Alwar, Rajasthan